शहीद अस्पताल

स्वास्थ्य संगवारी

अंक - 8
अप्रैल 2023

मेहनतकशों के स्वास्थ्य के लिए
मेहनतकशों का अपना कार्यक्रम

सहयोग राशि रू. 10.00 मात्र

फोन : 75877 58107
e-mail : shaheedhospital@gmail.com
Website : www.shaheedhospital.org

लाल जोहार साथियों हमारी स्वास्थ्य पत्रिका के इस अंक में आपका स्वागत है।

शहीद अस्पताल द्वारा प्रकाशित स्वास्थ्य पत्रिका के पिछले अंक में हम शिशुओं के देखभाल से संबंधित चर्चा किये थे, इस अंक में कैंसर बीमारी पर चर्चा करेंगे।

संपादकीय

हम सभी जानते है कि कैंसर एक बहुत ही खतरनाक बीमारी है और बहुत कम लोग ऐसे होते है जो इस बीमारी से बच पाते है। कैंसर में शरीर के किसी भी हिस्से की कोशिकाएं अनियंत्रित रूप से बढ़ती है। यह बीमारी समय से पता न चलने के कारण लाईलाज बन जाता है। बहुत से लोग जानकारी के अभाव में कैंसर की चपेट में आकर दम तोड़ देते है।

पिछले कुछ सालो के आकड़ों के अनुसार भारत में पुरूषों में सबसे ज्यादा मुंह और फेफड़ो के कैंसर के मामले सामने आए और महिलाओं में ब्रेस्ट और गर्भाशय के कैंसर है।

हर साल 4 फरवरी को कैंसर दिवस मनाया जाता है इसके पीछे का उद्देश्य आम लोगो को कैंसर के खतरों के बारे में सावधानियां एवं जागरूक करना है।

सोनू चिन्तित है आज अस्पताल आया था। दांत की जांच कराने दांतों के डॉक्टर के पास गया। डॉक्टर ने बहुत सारा सवाल किया जांच भी किया और बताया कैंसर का अनुमान है। कैंसर का नाम सुनकर सोनू अब सोचता हैं कि जब पांचवी कक्षा में पढ़ता था तब दोस्तों के साथ सिगरेट पीना शुरू किया। कुछ दिन अच्छा लगा फिर नए दोस्त शंभू आया। जब छठवी कक्षा में था तब मीठा–मीठा चीज लाता। मुंह में रखने के लिए बोलता खाने से बहुत अच्छा लगता था। सिगरेट जैसे इसका भी धीरे–धीरे आदत लग गया। रोज कई बार जरूरत पड़ता खाने–पीने का मजा ही अलग था। अभी कुछ महीनो से धीरे–धीरे मुंह में खाने का स्वाद चला गया। और मुंह में छोटा सा घाव बन गया। कभी कभी खून आने लगता तो ईलाज के लिए डॉक्टर के पास जाता। सही जानकारी के अभाव में सोनू ऐसे ही कई बार ईलाज करवाता रहा और कुछ समय के लिए ठीक हो जाता और बार–बार ऐसा ही चलता रहा।

अभी सोनू की उम्र 30 साल है। इस उम्र में कैंसर सोच नहीं सकता। गांव में जितने भी लोग का कैंसर से मृत्यू हुआ किसी का भी उम्र 60 साल से कम नहीं था। इसलिए दांत के डॉक्टर पर गुस्सा आया। कुछ नहीं जानता झुटमुट डराने के लिए कैंसर की बात करता है।

तीन–चार दिन बाद सोनू दूसरे डॉक्टर के पास गया। उन्होने मुंह के अंदर अच्छे से जांच किया और मुंह के अंदर से मांस का छोटा टुकड़ा लेकर जांच के लिए भेंजेगे ऐसा बताया। दूसरा दिन डॉक्टर मांस का टुकड़ा लिया और जांच के लिए भेजा। एक सप्ताह बाद रिपोर्ट आना था सोनू डरते हुए डॉक्टर के पास गया डॉक्टर ने सोनू को बैठाया और रिपोर्ट बताते हुए कहा कैंसर आया है। ईलाज और ऑपरेशन से ठीक हो जाएगा। सोनू का ऑपरेशन हुआ और दवाई भी चला। सोनू अभी स्वस्थ है।

सोनू की कहानी जैसे हर साल कई कैंसर के कारण मृत्यू की माला पहनते रहते हैं। सोनू सही समय पर ईलाज नहीं करवाने से मृत्यू की माला खुद पहन लेता। कुछ कैंसर हम लोग स्वागत करके बुलाते हैं। तंबाकू, गुटखा, सिगरेट जैसे चीजों का सेवन करके आज सोनू समझ गया और पुराने दोस्तों के साथ मिलकर कैंसर निवारण के लिए संगठन बनाया।

कैंसर है भयानक, ना पहचानो तो भैय्या
अपने शरीर के अंगों को समझो भैय्या
न तुम घबराओ भैय्या
समय पर ईलाज संभव है भैय्या।।
न तुम डरना और न डराना दीदी
सफेद पानी, दर्द हो या महावारी में समस्या
छोटा हो या बढ़ता बेडौल स्तन दीदी
तुम इसकी जांच स्वयं करना दीदी
कैंसर का ईलाज संभव है दीदी
बस तुम समय पर जांच करवाना दीदी।

(सिस्टर - सुनीता सिन्हा)

Cervical Cancer (सर्वाइकल कैंसर)

सर्वाइकल कैंसर गर्भाशय ग्रीवा के अस्तर में असामान्य कोशिकाओं की अनियंत्रित वृद्धि है। गर्भाशय ग्रीवा महिला प्रजनन का हिस्सा है और गर्भ के निचले हिस्से में स्थित है जो गर्भ से योनि तक खुलती है। इस कैंसर को बच्चेदानी के कैंसर के नाम से भी जाना जाता है।

सर्वाइकल कैंसर के संकेत एवं कारण :–

1. अनियमित खून का योनि से बहाव।
2. अत्यधिक योनि स्त्राव।
3. पेशाब या संभोग के दौरान दर्द।
4. मासिक धर्म चक्र या रजोनिवृत्ति के बाद और पैल्विक परीक्षा के बीच होने वाली रक्त स्त्राव।
5. श्रेणी में अस्पश्टीकृत दर्द।
6. तेज गंध के साथ योनि से स्त्राव।
7. मैनोपोज में खून बहना।

कारण :–

अधिकांश सर्वाइकल कैंसर ह्यूमन पैपिलोमा वायरस (एचपीवी) संक्रमण के कारण होती है।

एचपीवी वायरस का एक समूह है जो दुनियाभर में बेहद आम है। एचपीवी के 100 से अधिक प्रकार है। जिनमें से कम से कम 14 कैंसर पैदा करने वाले है। एचपीवी को गुदा योनि, योनि लिंग और आरोफरीनक्स के कैंसर से जोड़ने के प्रमाण भी है।

- **सर्वाइकल कैंसर किस उम्र की महिलाओं में होता है**

आमतौर पर कम उम्र के समूहों को प्रभावित नहीं करता है। यह ज्यादातर 35 वर्ष से अधिक उम्र की महिलाओं में होता है। हालांकि निदान की आवृत्ति 35 से 44 वर्ष की बीच अधिक होती है।

- **सर्वाइकल कैंसर का दर्द कैसा महसूस होता है**

सर्वाइकल कैंसर के शुरूवाती चरण गैर घातक होते है और आमतौर पर योनि से रक्तस्त्राव डिस्चार्ज और दर्द जैसे कुछ लक्षण दिखाई देते हैं। दर्द आमतौर पर श्रेणी क्षेत्र में होता है। एक विशिश्ट क्षेत्र में दबाव जैसे महसूस होता है। दर्द की प्रकृति कम या तेज हो सकती है। जबकि उपस्थित निरंतर या रूक–रूककर होती है। यह संभोग जैसी कुछ स्थितियों में बिगड़ जाती है।

- **सर्वाइकल कैंसर का ईलाज :–**
  1. सर्जरी
  2. विकिरण
  3. कीमोथेरेपी

(1) सर्जरी :– कैंसर फैलने के स्थान और सीमा के आधार पर सर्जरी शरीर से कैंसर कोशिकाओं को हटा देती है। सर्जरी बच्चों को जन्म देने का ध्यान में रखती है। सर्जरी तब की जाती है जब ट्यूमर कोशिकाओं को समग्र रूप से हटाया जा सकता है। इन प्रक्रियाओं में विकसित कैंसर कोशिकाओं को मारने के लिए लेजर बीम या फ्रीजिंग और नश्ट करने के तरीके शामिल है और इसके आगे गुणन को रोकते है।

(2) विकिरण :– विकिरण कैंसर कोशिकाओं को मारने के लिए योनि गुहा में उच्च खुराक वाले एक्स–रे या प्रत्यारोपण से गुजरता है। यह दो प्रकार की होती है। बाहरी और आंतरिक। गर्भाशय ग्रीवा में बड़े ट्यूमर के लिए रेडियोथेरेपी की जा सकती है। और यह आमतौर पर तब की जाती है जब कैंसर कोशिकाएं गर्भाशय ग्रीवा से आगे फैल गई हो और सर्जरी से ईलाज योग्य न हो। रेडियोथेरपी का उपयोग सर्जरी के बाद भी किया जा सकता है जब कैंसर के वापस आने का उच्च जोखिम होता है।

(3) किमोथेरपी :– किमोथेरेपी एक ऐसी विधि है जो कैंसर कोशिकाओं को मारने के लिए दवाओं का उपयोग करती है। जिसे आमतौर पर नस में इंजेक्ट किया जाता है।

किमोरेडियेशन किमोथेरेपी और विकिरण चिकित्सा का एक संयोजन है।

सर्वाइकल कैंसर के ईलाज में इस्तेमाल की जाने वाली विधियों के कई दुष्प्रभाव

1. सर्जरी के दुष्प्रभाव :–सर्जरी के लिए अंडाशय को हटाने की भी आवश्यकता हो सकती है। जिसके कारण कोई गर्भधारण नहीं हो सकता।
2. विकिरण चिकित्सा के दुष्प्रभाव :–सर्वाइकल कैंसर के लिए विकिरण चिकित्सा रोगी का थकान (थकावट), पेट खराब, दस्त या ढ़ीले मल, मतली और उल्टी और त्वचा में परिवर्तन जैसे दुष्प्रभाव हो सकते है।
3. बैक्रीथेरेपी विकिरण के दुष्प्रभाव :– बैक्रीथेरेपी विकिरण केवल थोड़ी दूरी तक जाता है और गर्भाशय ग्रीवा और योनि की दीवारों पर जलन पैदा करता है। विकिरण चिकित्सा के दीर्घकालिक दुष्प्रभाव में योनि स्टेनोसिस और योनि का सूखापन शामिल है।
4. श्रेणी को विकिरण के दुष्प्रभाव :– श्रेणी में विकिरण हड्डियों को कमजोर कर सकता है जिससे हड्डियों का घनत्व कम हो सकता है और हड्डियों में फ्रेक्चर हो सकता है। हिप फ्रेक्चर सबसे आम है।

Lung Cancer फेफड़ें का कैंसर

फेफड़ों के कैंसर के लक्षण :–

- अधिक समय तक खांसी रहना।
- छाती में दर्द होना।
- सांस लेने में कठिनाई होना।
- खांसी में खून का आना।
- हर समय थकान महसूस होना।
- बिनी किसी कारण के वजन का कम होना।
- भूख न लगना।

कारण :–

1. फेफड़ों में कैंसर का सबसे बड़ा कारण धुम्रपान है।
2. तंबाकू चबाना।
3. धुंए के संपर्क में ज्यादातर आना।
4. Genetic (पारिवारिक इतिहास के कारण भी होता है।)

धुम्रपान फेफड़ों में मौजूद कोशिकाओं को नुकसान पहुंचाकर फेफड़ों के कैंसर का कारण बनता है। जब आप सिगरेट के धुंएं कों अपने अंदर लेंते हैं जो कैंसर पैदा करने वाले पदार्थों से भरा होता है। इससे फेफड़ें के ऊतकों में परिवर्तन होना शुरू हो जाता है। ऐसी स्थिति में सबसे पहले आपका शरीर इस नुकसान की मरम्मत करने सक्षम हो सकता है। लेकिन बार–बार धुंए के संपर्क में आने से फेफड़ों वाला सामान्य कोशिकाएं तेजी से क्षतिग्रस्त होने लगती है। समय के साथ–साथ क्षति के कारण कोशिकाएं असामान्य रूप से कार्य करने लगती है। इससे अंततः कैंसर विकसित हो सकता है।

स्टेज :–

गुप्त अवस्था :– कैंसर वाले सेल आपके द्वारा खांसने के दौरान आने वाले बलगम तक पहुंच सकते है। इसे ट्यूमर इमेजिंग स्कैन या बायोप्सी पर नहीं देखा जा सकता। इसे हिडन कैंसर भी कहते हैं।

स्टेज 0 :– इस अवस्था में कैंसर ट्यूमर बहुत छोटा होता है। इसमें कैंसर की कोशिकाएं फेफड़ों के शहरे टिशू में या फेफड़ों के बाहर नहीं फैली होती है।

स्टेज 1 :– इस स्थिति में कैंसर फेफड़ों के सेल्स में होता है ना कि लिम्फ नोड्स में।

स्टेज 2 :– हो सकता है कि बीमारी फेफड़ों के पास मौजूद लिम्फ नोड्स में फैल गया हो।

स्टेज 3 :– इस स्थिति में कैंसर लिम्फ नोड्स और छाती के बीच में फैल गया होता है।

स्टेज 4 :– इस स्थिति में कैंसर शरीर में व्यापक रूप से फैल गया होता है। हो सकता है कि यह मस्तिष्क, हड्डियों या यकृत में फैल गया हो।

ईलाज :–

सर्जरी :– सर्जरी में ऑपरेशन किया जाता है जिसमें डॉक्टर कैंसर के ऊतकों को काटकर निकाल देते है।

कीमोथेरेपी :– कैंसर को मारने के लिए विशेष दवाओं का उपयोग करना। इसमें मरीज को दवा की गोलियां दी जा सकती है या नसों के माध्यम से दवाइयों को शरीर में पहुंचाया जाता है।

रेडियेशन थेरेपी :– कैंसर को मारने के लिए उच्च ऊर्जा एक्स–रे किरणों का उपयोग किया जाता है।

टारगेट थेरेपी :– यह कैंसर को समाप्त करने में कारगार उपाय साबित हो सकती है। इसमें कैंसर को समाप्त करने के लिए दवाइयों का उपयोग किया जाता है।

मुंह का कैंसर :– यह कैंसर होठ और जीभ में ज्यादातर होता है। यह कैंसर किसी भी उम्र में हो सकता है। जो लोग गुटखा, तंबाकु का नशा करते है उनको होता है।

लक्षण :–

1. मुंह में गांठ होना।
2. घाव होना ईलाज के बाद भी ठीक न होना।
3. गले में गिल्ठी होना।
4. घाव से खून गिरना।

सावधानियां :–

- गुटखा, तंबाकु का नशा नहीं करना है।
- मुंह में कोई भी घाव हो जो ठीक नहीं हो रहा हो तो तुरंत डॉक्टर से सलाह लें।

स्तन कैंसर :–

स्तन कैंसर स्तन कोशिकाओं की अनियंत्रित बढ़ोतरी है। आमतौर पर लोब्यूल्स और दुग्ध नलिकाओं में घुसकर वे स्वस्थ कोशिकाओं पर आक्रमण करते है। और शरीर के अन्य भागों में फैल जाते है। आप इसे गांठ के रूप में महसूस कर सकते है। स्तन कैंसर की कोशिकाएं एक ट्यूमर बनाती है जिसे एक्स–रे पर देखा जा सकता है।

लक्षण :– स्तन में गांठ या लंप सूजन होना ये ब्रेस्ट कैंसर के आम लक्षणों में से एक है।

ब्रेस्ट कैंसर की पहचान :–

- निप्पल में खून जैस पानी या डिस्चार्ज होना। स्तन के आकार में बदलाव होना।
- स्तन में जलन, लकीरे, सिकुड़न होना।
- स्तन का कोरापन।
- स्तन के आकार में बदलाव जैसा उंचा, टेढ़ा–मेढ़ा होना।
- **कैंसर का कारण** :– कैंसर की बीमारी आमतौर पर सेल्स की अंदर डीएनए म्यूटेशन (बदलाव) के कारण होता हैं सेल या कोशिका के अंदर डीएनए होता है। और इसमें कई जीन्स होते है। और ये जीन्स ही कोशिका को निर्देश देते हैं कि किस तरह बढ़ना है। कितने भागों में बंटना है। और किस तरह कार्य करना है।

ब्रेस्ट कैंसर के कारण :–

1. मासिक धर्म में परिवर्तन :– इस बात महिलाएं विशेष ध्यान रखें कि अगर मासिक धर्म या पीरियड्स में कुछ परिवर्तन देखे तो तत्काल डॉक्टर से संपर्क करें। जैसे की 12 साल की उम्र से पहले ही मासिक धर्म शुरू हो जाए या 30 साल की आयु के बाद गर्भवती हो या 55 की उम्र के बाद मीनोपाज हो या फिर पीरियड्स का समय 26 दिनों से कम या 29 दिनों से ज्यादा का हो जाए।

2. नशीले पदार्थो का सेवन :– शराब, सिगरेट या ड्रग्स के सेवन से भी महिलाओं को ब्रेस्ट कैंसर होता है। किसी भी नशे का अत्यधिक सेवन शरीर में कैंसर को जन्म देती है।

3. परिवार का इतिहास :– परिवार का इतिहास ब्रेस्ट कैंसर में अहम कड़ी है। ब्रेस्ट कैंसर ऐसा रोग है जो पीढ़ियो तक चलता हैं यदि किसी बहुत करीबी रिश्ते जैसे सगे संबंधी में किसी को ब्रेस्ट कैंसर हुआ है तो ऐसे में उस परिवार में किसी महिला में ब्रेस्ट कैंसर होने की संभावना बढ़ जाती है।

4. परिवार में ही कोई दूसर कैंसर :– परिवार में सिर्फ ब्रेस्ट कैंसर ही नहीं बल्कि यदि किसी भी प्रकार का कैंसर किसी व्यक्ति को है तो भी परिवार के लोगों को सतर्कता रखनी होगी। क्योंकि यह सारा शरीर कोशिकाओं का खेल है और परिवार वालों की कोशिकाएं और खून मेल खा सकता है।

बेस्ट कैंसर के स्टेज :–

1. शून्य श्रेणी :– दूध बनाने वाली कोशिकाओं में बना कैंसर सीमित रहता है। और शरीर के दूसरे हिस्सों तक नहीं जाता।

2. पहली श्रेणी :– कैंसर वाली कोशिकाएं धीर–धीरे बढनें लगती है। यह शरीर की बाकी हेल्दी कोशिकाओं को नुकसान पहुंचाना शुरू कर देती है। यह स्तन में मौजूद वसा वाली कोशिकाओं तक भी फैल सकती है।

3. दूसरी श्रेणी :– इसमें आकार बहुत तेजी से बढ़ना शुरू हो जाता है और शरीर के बाकि भागों में भी फैल जाता है।

4. तृतीय श्रेणी :– इसमें कैंसर मानव की हड्डियों में पहुंचकर उन्हें प्रभावित करना शुरू कर देता है। इसी के साथ कॉलर बोन में इसका छोटा हिस्सा फैल चुका होता है। जो इसके ईलाज को दुर्गम बनाता है।

5. चौथी श्रेणी :– इस श्रेणी में आकर कैंसर लगभग लाईलाज हो जाता है क्योंकि चौथी श्रेणी में आते–आते कैंसर लिवर, फेफड़ों, हड्डियों और मस्तिष्क में भी पहुंच चुका होता है।

ब्रेस्ट कैंसर का उपचार :– ईलाज करने के भी कई साधन है जैसे :–

- कीमोथेरेपी
- रेडियेशन
- सर्जरी

सेल्फ एग्जामिनेशन यानि स्वयं की जांच है बहुत जरूरी

हर महिला को अपने स्तन के आकार, रंग, ऊंचाई और उनके ठोसपन की जानकारी होनी जरूरी है। स्तन में किसी भी प्रकार के बदलाव दिखने जैसे त्वचा और निप्पल पर धारियां, निशान, सूजन आदि पर ध्यान दें। हर महिला को खड़े होकर या लेटकर अपने स्तनों का परीक्षण करना चाहिए।

महिलाओं को 40 की उम्र के बाद स्क्रीनिग करानी अनिवार्य हैं यदि कैंसर का कोई परिवार में इतिहास हो तो ध्यान रहे कि 20–21 साल की आयु में ही हर 3 साल के अंतराल में स्तनों की जांच आवश्यक है। अल्ट्रासाउंड भी कराया जा सकता है। अगर रिस्क बहुत है तो MRI भी करवाना चाहिए।

स्तन कैंसर के संकेत और लक्षण

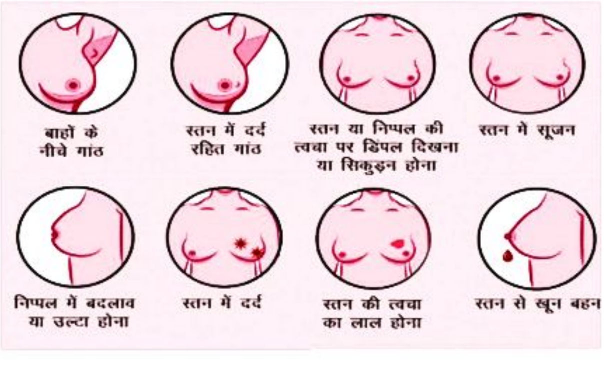

माँ बनने का एहसास

मै सरिता बाई, हितकसा की निवासी हूं। मेरी शादी हुए 15 साल हो गया है। मेरा पहला बच्चा 2009 में आने के बाद खत्म हो गया। मेरे दूसरे बच्चे की डिलवरी घर में हुई। बच्चा कमजोर होने के कारण शहीद शहीद अस्पताल लाये थे लेकिन 21 दिन में खतम हो गया। मैने तीसरे बच्चे को जन्म दिया वो भी खतम हो गया। दिनांक 30. 01. 2023 को मैंने चौथे बच्चे को जन्म दिया लेकिन बच्चा को झटका आ रहा है इसलिए रिफर किया गया है मैं अपने पति को फोन करके पूछती हूं कैसा है मेरा बच्चा तो मेरे पति बताते है कि बच्चा पहले से ठीक है। मेरा तीन बच्चा खतम हो जाने के बाद यह मेरा चौथा बच्चा है। इसलिए यह मेरे लिए बहुत ही कीमती है। मेरे बच्चे को जब भी देखती हूं बहुत ही खुशी का एहसास होता है। डिलवरी के पहले मेरा बीपी बहुत ही बढ़ा हुआ था। अभी ठीक है। दिनांक 06. 02. 2023 को अस्पताल से मेरी छुट्टी हुई। अब मुझे मेरे बच्चे का इंतजार है जल्द ठीक होकर घर आए।

सामान्य प्रसव एवं सिजेरियन प्रसव का अनुपात

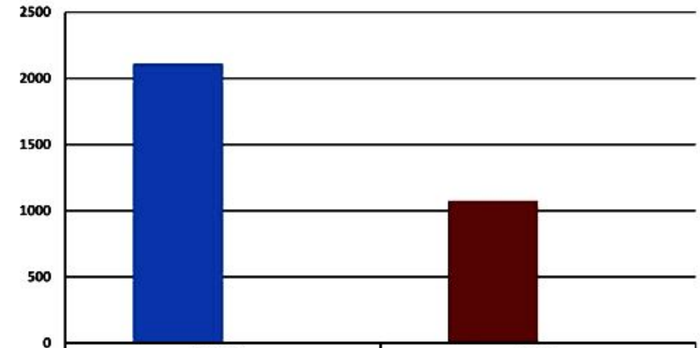

	Normal	LSCS
Series1	2113	1076
Series2	66.26%	33.74%

पी.जी.डी.एफ.एम. कोर्स ट्रेनिंग डॉक्टर्स, छत्तीसगढ़ के प्रशिक्षु डॉक्टरों को शहीद अस्पताल के डॉक्टर व सिस्टर्स द्वारा प्रशिक्षण प्रदान करते हुए।

सास बहु के गोठ–बात

लता :– मां आज खाना में का साग बनाना हे, मे हा मही रखे हो खट्टा साग बनाहु काहत रहेव।

सास :– नही बहु खट्टा मत बना कोई दुसरा साग बना अऊ खट्टा वाले साग बनाबे त मोर बर दुसरा साग बना देबे।

लताः– काबर त मां तोला तो खट्टा साग बड़ पसंद हे का।

सासः– हव फेर अभी थोरकिन समस्या हे, तेकर सेती नइ खाव।

लताः– का होगे मां बता मोला, कइसे नई बतास।

सासः– कुछु नई आए वो महीना अकन होइस हे मोर एक ठन थन थोरकिन कड़ा–कड़ा लागथे। गठान हो गेहे त खट्टा खाये ले पाक जही कथो वो।

लताः– गठान होना तो ठीक नोहे मां महिना दिन होगे ता बताना रहिस न। जांच करवाये ल जातेन।

सासः– कही नई होये वो, मेहा बैगिन दीदी करा गे रेहेव फुकवा हो तेल देहे लगाय बर ठीक हो जही।

लताः– नहीं मां ये उमर में थन में गठान होना मतलब बड़ें बीमारी हो सकत हे। मेहा टी.वी. में देखें रहेव स्तन कैंसर नाम के बिमारी के बारे में। जेमा शुरू में गठान बनथे फिर धीर–धीरे बढ़थे। बाद में बड़े खतरा हो जथे। ते हा फुका झारा के चक्कर में झन रा। मां अस्पताल जाके जांच करा ले थन।

सासः– अई हम तो अइसन कभु नई जानन दई हम नई जान अस्पताल डॉक्टर मन फेर ऑपरेशन कर देही काट देही कोन जनी दई का करही मार डारही।

बहुः– नहीं मां डॉक्टर मन जो भी करथे मरीज के अच्छा बर करथे, बचाय बर करथे। तेहा डररा झन। काली तोर बेटा ल कहु अस्पताल लेगे बर। जांच करवा के आ जबो।

सासः– ले काहत हस त चल देहु फेर संग मा ते जाबे बहु मे एके झन नई जाव अऊ बेटा सन जाये बर सरम लागही।

बहुः– ठीक हे मां जिला अस्पताल में महिला डॉक्टर बइठथे उहे जाबो।

दूसरा दिन अस्पताल में जांच के बाद

डॉक्टरः– कैंसर का लक्षण लग रहा है। आप लोग ठीक किये जल्दी ईलाज के लिए आए क्योंकि कैंसर का जितना जल्दी पता चले ईलाज उतना ही संभव है। बढ़ने के बाद स्थिति गंभीर हो जाती है।

सासः– बने करे बहु अस्पताल लेके आये नहीं ते मे हा बैगा अऊ फुक झाड़ के चक्कर में बढा डारतेव।

पूरे बालोद जिले में आयुष्मान भारत योजना का लाभ सर्वाधिक हितग्राहियों को प्रदान करने हेतु जिले के कलेक्टर महोदय श्री कुलदीप शर्मा जी द्वारा शहीद अस्पताल प्रबंधन को प्रशस्ति-पत्र प्रदान कर सम्मानित करते हुए।

सम्मानीय पाठकों से निवेदन है कि पत्रिका से संबंधित आवश्यक सुझाव हेतु शहीद अस्पताल के पते पर पत्र-व्यवहार या ई-मेल द्वारा अपने सुझाव भेज सकते है।

संपादक - दीपांजली, हेमलता, सुनीता "स्टाफ सिस्टर, शहीद अस्पताल, दल्ली राजहरा" मुद्रक - राव प्रिंटर्स, राजहरा

स्वास्थ्य संगवारी के अगले अंक में मानसिक स्वास्थ्य रोग के बारे में चर्चा करेंगे।